मार्च-२०२६ ◇ वर्ष १४ ◆ अंक ११ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
मार्च-२०२६

दान सरिता ऐसी बही
शहीदों की चर्चा अब घर-घर हुई

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १७३

भारत के सरताज

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH मसाले

सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1250
आजीवन	- 1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	- 600 रु.	$ 125
वार्षिक	- 150 रु.	$ 30
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२५
फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी
विक्रम संवत्
२०८२
दयानन्दाब्द
२०१

March- 2026

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

०४	शुभकामना सन्देश
१५	मुख्य अतिथि वक्तव्य
१३	चित्रमय झलकियाँ
१८	अनुगूँज
२४	सत्यार्थ मित्र बनें
२५	'सर्वोच्च राष्ट्रमन्दिर'
२८	राष्ट्र मन्दिर गाथा
३०	राष्ट्र मन्दिर-राष्ट्रवीर गाथा

न्यास समाचार २९

स्वामी — श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | वर्ष - १४ | अंक - ११ | द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर — मुद्रण

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ਗੁਲਾਬ ਚੰਦ ਕਟਾਰੀਆ
गुलाब चन्द कटारिया
Gulab Chand Kataria

ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਰਾਜਪਾਲ ਅਤੇ ਕੇਂਦਰ ਸ਼ਾਸਤ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਦੇ ਪ੍ਰਸ਼ਾਸਕ
पंजाब के राज्यपाल एवं केन्द्र शासित
प्रदेश चंडीगढ़ के प्रशासक
Governor of Punjab &
Administrator of U.T. Chandigarh

20 फरवरी 2026

शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के नेतृत्व में उदयपुर स्थित नवलखा महल में युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के वैदिक मन्तव्य के प्रचार-प्रसार, भारतीय संस्कृति के वैभव और गौरव की स्थापना तथा युवाओं में राष्ट्रबोध जाग्रत करने हेतु निरन्तर उत्कृष्ट और सार्थक कार्य किए जा रहे हैं। नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र के सभी प्रकल्पों का मैंने स्वयं ने अवलोकन किया है और जिस प्रकार से देश-विदेश से आने वाले असंख्य पर्यटकों को संस्कार, राष्ट्रप्रेम और सांस्कृतिक चेतना का सन्देश दिया जा रहा है, जो अत्यन्त सराहनीय है।

यह जानकर और भी प्रसन्नता है कि नई पीढ़ी को अपने क्रान्तिकारियों और स्वाधीनता संग्राम के प्रेरणा स्रोतों से जोड़ने के उद्देश्य से, उन हुतात्माओं को समर्पित राष्ट्र मन्दिर के रूप में एक उच्च कोटि के सिलिकॉन म्यूजियम का लोकार्पण **22** फरवरी **2026** को किया जा रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों से प्रेरित राष्ट्रनिष्ठ चेतना को आधुनिक तकनीक के माध्यम से प्रस्तुत करने का यह प्रयास उदयपुर नगरी की सांस्कृतिक पहचान को नए आयाम प्रदान करेगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए स्थायी प्रेरणा बनेगा। इस अवसर पर अनेक संन्यासी, विद्वान् और बड़ी संख्या में आर्यजन की उपस्थिति इस आयोजन के महत्व को और भी बढ़ाती है।

मैं कामना करता हूँ कि यह समारोह भव्य, गरिमामय और प्रेरणादायी रूप में सम्पन्न हो तथा यह राष्ट्रबोध, वैदिक मूल्यों और भारतीय सांस्कृतिक चेतना को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाए। इस पुनीत अवसर पर मैं आयोजकों को हार्दिक बधाई देता हूँ और अपनी ओर से शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(गुलाब चन्द कटारिया)

Lok Bhavan, Punjab, Sector-6, Chandigarh-160 019
Phone No.: 0172-2740608, 2740609, 2740610, Fax: 0172-2741058
E-mail: admr-chd@nic.in

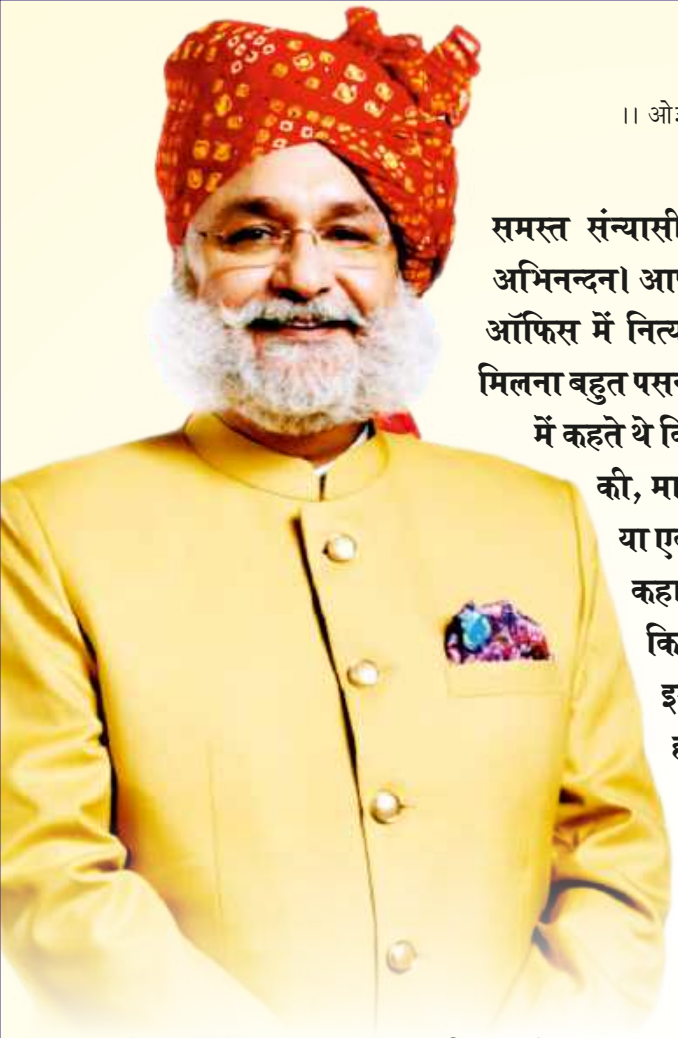

।। ओ३म् ।।

महाशय राजीव जी गुलाटी

समस्त संन्यासीगण। आये हुए अतिथिगण को मेरा नमस्ते, अभिनन्दन। आपको मैं एक जरा सी बात बताता हूँ जो एमडीएच के ऑफिस में नित्य प्रति रोज होती थी। महाशय जी को लोगों से मिलना बहुत पसन्द था। वे जिससे भी मिलते थे एक बात बातों बातों में कहते थे कि मैंने पाच सौ साल नहीं मरना। कहते हैं कि प्राणी की, मानव शरीर की ज्यादा से ज्यादा सौ साल उम्र होती है या एक सौ बीस पार कर लेते हैं। पाच सौ साल का गणित कहा से आ गया? हम भी इस बात को मानने लग गए थे कि महाशय जी पांच सौ साल जीयेंगे। हमें कभी भी इस प्रकार का प्रतीत ही नहीं होता था कि उनका हाथ हमारे सिर से उठ जायेगा। वो बहुत बड़ा सदमा सभी के लिए था, परिवार के लिए तो था ही सारी इंडस्ट्री के लिए भी था। आर्य समाज के लिए भी इस रिक्त स्थान को कैसे भरा जायेगा, मुझे कोई ज्ञान नहीं था। परन्तु एक दिन ऐसे ही विचार कर रहा था कि पांच सौ साल जीने का रहस्य क्या है? उस वक्त बातों बातों में यह समझ आया कि आर्य समाज के तीन इस प्रकार के स्थान थे जहां से महाशय जी सीधे जुड़े हुए थे। एक वो स्थान जहां पर स्वामी जी का जन्म हुआ। दूसरा वह स्थान जहा सत्यार्थ प्रकाश लिखी उदयपुर। तीसरा वह स्थान जहां पर स्वामी जी अपने प्राण त्यागे। मुझे चाबी मिल गई। पांच सौ साल तक पिताजी जीवित रहेंगे।

उसी दिन से मुझे मन में प्रेरणा मिली कि इन तीन स्थानों का सबसे पहले विजिट किया जाए और वहाँ पर क्या कुछ किया जा सकता है। काम बड़ा करना है तो बजट भी बड़ा चाहिए। एक विचार भी चाहिए। इन सारी बातों को ऐसेस करने मैं टकारा भी गया। मैं उदयपुर भी आया। मैं भिनाय कोठी, अजमेर भी गया। टंकारा की दशा जो जो भी वहाँ गया है उसकी स्थिति जानते हैं। और मैने यह भी सुना है कि महाशय जी स्वयं टंकारा गए थे तो टंकारा की स्थिति देखकर उनकी आखों में आंसू आ गए। ये बात मुझे अच्छे से याद है और सच में वहां का वही हाल है। वहाँ की दशा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। कुछ परिवर्तन पिछले दो तीन सालों में हुए होंगे, कह नहीं सकता।

महर्षि दयानन्द की द्विजन्मशताब्दी वहाँ मनाई तो हो सकता है कि यहां कुछ परिवर्तन आये हों। परन्तु जब मैं उदयपुर आया नवलखा महल, यहाँ आकर मन को बहुत अच्छा लगा। चलो एक स्थान को तो किसी ने

संभाल कर रखा है। अशोक जी को मैं काफी समय से जानता था। महाशय जी से मिलने आते थे पर इतना कोई परिचय नहीं था। नमस्ते होती थी। परन्तु यहाँ आने के बाद उनसे बातचीत हुई। आर्य समाज के बारे में, सत्यार्थ प्रकाश के बारे में, स्वामी जी के जीवन के बारे में उन्हें अथाह ज्ञान प्राप्त है। तभी उनसे काफी बातचीत हुई। स्वामी जी के बारे में जाना। इस स्थान के बारे में जाना। बातों ही बातों में उन्होंने कहा कि यह जो इमारत है वह डेढ़ दो सौ वर्ष पुरानी है। इसकी हालत बहुत ठीक नहीं है। देखने में तो ठीक लगती है परन्तु इसका कुछ न कुछ करना पड़ेगा। मैंने उसी समय कहा कि इस स्थान के लिए तो महाशय जी की अनकही आज्ञा है। इसको जल्दी से जल्दी जितना बढ़िया बना सकें बनाएं।

आज आप इसी स्थान पर देख रहे हैं। आज आपने यहां एक नया प्रकल्प 'राष्ट्र मंदिर' देखा है। नहीं देखा है तो जरूर देखें। अजमेर के बारे में पता लगा। वहां कार्यकर्ता सुभाष जी काफी कर्मठ हैं। वहां पर हमें जगह मिल गई है। वहां पर स्वामी जी की एक मूर्ति लगाई है। जहां हम मूर्ति खड़ी कर रहे है वहां विवाद हो सकता है कि स्वामी जी तो मूर्ति का खण्डन करते थे मूर्ति पर कोई माथा टेकेगा। मैंने कहा कि मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है जिसको माथा टेकना है वह माथा टेके जिसको नहीं टेकना है वह नहीं टेके। अजमेर आप जानते हैं कि वह किसलिए प्रसिद्ध है, तो मन में एक इच्छा थी कि वहां एक स्मारक बने ताकि शहर का नाम जो है वह स्वामी दयानन्द के नाम से जाना जाए। अगर आप वहां जाइए। मैं भी दो तीन बार वहां गया हूं, मुझे बहुत शाति मिली। इस प्रकार का जो स्मारक बना है वह आर्य समाज को प्रेरणा देगा एवं लोगों को आने के लिए विवश करेगा।

आज हमने जो 'राष्ट्र मंदिर' बनाया है उसमें अमर शहीद बलिदानियों की मूर्तियां लगी हैं। उनमें से बहुत से हैं जिनके बारे में इतिहास में पढ़ाया नहीं गया है और आज की जो युवा पीढी है उसका भी कुछ रास्ता बदला हुआ है। यहाँ आकर उनका ज्ञानवर्धन ही होगा और स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों से भी प्रेरित होंगे। मैं स्वयं भी आज से दस वर्ष पूर्व आर्यसमाज के बारे में बहुत ज्यादा कुछ नहीं जानता था। मुझ में भी अब काफी परिवर्तन आया है। एक परिवर्तन यह भी है कि धन का संग्रह जरूर करो, परन्तु उसका इस्तेमाल सदा अच्छे कामों में करो। ये जो स्मारक बन रहे हैं वो हमारे लिए नहीं हैं, ऐसा मैं समझता हूं। आने वाली जो भावी पीढी है उनके लिए कुछ इस प्रकार के चिह्न छोड़ जाएँ वह बहुत लम्बे समय तक रहे तो लम्बे समय तक मेरे पिताजी की इच्छापूर्ति होती रहेंगी।

आप सभी का सहयोग मिले तो मेरी कोशिश यह है कि इस प्रकार के आयोजन तो हम करते रहते हैं। किन्तु स्वामी जी से संबधित जो स्थल हैं वहां भी कुछ अच्छा किया जा सकता कि वे स्मारक के रूप में स्थापित हो सकें ताकि आर्य जगत् को भी कुछ अच्छा मिल सके। जहां वे जा सकें और प्रेरणा पा सकें। चिन्तन करने से दो व्यक्ति मुझे मिले हैं एक सुभाष जी एवं श्री अशोक जी मिले है तो आप देखेंगे कि इन स्थलों का कायाकल्प हो सकता है। आप में से ही और भी कोई कर्मठ व्यक्ति मिले तो इन स्थलों का कायाकल्प हो सकता है। मुझसे जो भी यथासंभव सहायता होगी अवश्य करूंगा। धन्यवाद।

आत्म निवेदन

राष्ट्र मन्दिर-लोकार्पण : आँखों देखी

आज की सुबह कुछ विशेष थी। आसमान साफ था। सूर्य देवता जैसे ही उदित हुए, चारों ओर प्रकाश फैल गया। पूज्य स्वामी दयानन्द जी की कर्मस्थली नवलखा महल में आज विशेष चहल-पहल दिखाई दे रही थी। ऐसी भव्य सज्जा तो पिछले कई वर्षों से देखी नहीं गई थी। रात ही रात में डिजाइनर ने कमाल कर दिया था। चारों ओर "राष्ट्र मंदिर" ही "राष्ट्र मंदिर" दिखाई दे रहा था। क्यों न दिखे? आज इस सर्वथा अनूठे प्रकल्प का लोकार्पण होना था, और लोकार्पण करना था उस महान् व्यक्ति को, जिन्होंने इस परिकल्पना को साकार किया, मूर्त रूप दिया और जिनके अर्थ-सहयोग से यह संभव हो पाया कि माँ भारती के उन १८ लालों को, जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए, सिलिकॉन स्टैचू के रूप में एक शानदार म्यूजियम बनाकर जनता जनार्दन को समर्पित किया जा सके।

नवलखा महल की भव्य यज्ञशाला में यज्ञ चल रहा था। वेदमंत्रों की ध्वनि वातावरण में गूँज रही थी। तभी

भामाशाह, पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी गुलाटी के सुपुत्र, देवतास्वरूप महाशय राजीव गुलाटी जी की अगवानी के लिए कुछ कारें एयरपोर्ट की ओर दौड़ पड़ीं। इनमें न्यास के अधिकारी तो थे ही, साथ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री प्रकाश आर्य, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री आचार्य जीववर्धन शास्त्री आदि वरिष्ठ आर्यजन भी थे।

एयरपोर्ट पर देवतास्वरूप भाई राजीव गुलाटी जी, उनकी सहधर्मिणी आदरणीया ज्योति जी गुलाटी एवं उनकी पुत्रियाँ हिरण्या और वान्या गुलाटी, श्री परमजीत खन्ना, श्री अनिल अरोड़ा आदि एमडीएच परिवार के सदस्य बाहर निकले। मालाओं से उनका स्वागत किया गया और ५० मोटरसाइकिलों की एक रैली उनकी अगवानी करती हुई नवलखा महल तक लेकर आई। नवलखा महल में प्राचीन, खुली छत वाली रोल्स-रॉयस में माननीय गुलाटी जी और ज्योति जी बिराजे, तो दूसरी गाड़ी में हिरण्या और वान्या थीं। अन्य गाड़ियों में एमडीएच परिवार के सदस्य थे।

अभूतपूर्व स्वागत

आर्यों के मन में, आर्य किशोरों के मन में, बालिकाओं के मन में उल्लास का समुद्र हिलोरें ले रहा था। कन्या गुरुकुल शिवगंज की ब्रह्मचारिणियों द्वारा बैंड वादन किया गया। हर दूसरे कदम पर आर्य विद्यालयों के बच्चों ने अपने प्रदर्शन और कौशल से मुख्य अतिथि का गर्मजोशी से स्वागत किया। साथ ही माँ शारदा आर्य समिति; उदयपुर, आर्य कन्या गुरुकुल, शिवगंज, आर्य बाल विद्या मन्दिर, भीलवाड़ा, आर्यवीर दल, आर्ष कन्या गुरुकुल; चित्तौड़गढ़, दयानन्द पैरडाइज़ स्कूल; आबूरोड, रानी गाइडीन्ल्यू वैदिक गुरुकुलम; नागालैंड के द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

नवलखा महल के ठीक सामने श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के सभी न्यासी उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही उनका काफिला आया, न्यास के वरिष्ठ उपाध्यक्ष विजय शर्मा जी ने मंत्रोच्चारण के मध्य श्री राजीव गुलाटी जी का तिलक किया। तत्पश्चात् न्यास अध्यक्ष श्री अशोक आर्य की सहधर्मिणी श्रीमती आभा आर्या ने श्रीमती ज्योति गुलाटी का तिलक किया।

अब तो पुष्पमालाएँ सर्वत्र दिखाई दे रही थीं। मेवाड़ी पाग हर अतिथि के सिर पर शोभायमान थी। गले में पुष्पमालाएँ, "वैदिक धर्म की जय" के नारे, सारा दृश्य अभिभूत कर देने वाला था।

महाशय जी की प्रतिमा का अनावरण

नवलखा महल में प्रवेश करते ही न्यास के पूर्व आजीवन अध्यक्ष और दान परम्परा के पुरोधा पद्मभूषण महाशय धर्मपाल गुलाटी जी की अष्टधातु से बनी अत्यन्त सजीव एवं सुंदर प्रतिमा का अनावरण किया गया। अनावरण होते ही पुष्पवर्षा ने अनूठा रंग प्रस्तुत कर दिया। सभी लोग श्रद्धा से उस महामनीषी के दर्शन कर रहे थे,

जिन्होंने आर्य समाज की अनेक संस्थाओं को पुष्पित-पल्लवित किया।

नवलखा महल की बात करें तो माता लीलावंती सभागार का निर्माण २००७ में करवा कर जिन्होंने नवाचारों की शृंखला की आधारभूमि तैयार की थी- वे थे पद्मभूषण महाशय धर्मपाल गुलाटी।

अब वह क्षण आया जिसका सभी को धड़कते दिलों के साथ इंतजार था। महाशय राजीव गुलाटी जी के कदम प्रथम तल पर बने राष्ट्र मंदिर की ओर बढ़ चले। लोकार्पण पट्टिका का अनावरण हुआ। सारा महल "वैदिक धर्म की जय" के नारों से गूँज उठा। "भारत माता की जय" और अमर शहीदों को विनम्र श्रद्धांजलि का ऐसा वातावरण बना कि सभी मंत्रमुग्ध हो गए।

मुख्य अतिथि के साथ भीतर प्रवेश करते ही जहाँ तक दृष्टि जाती, हर व्यक्ति आश्चर्य और हर्ष से भर जाता। सबसे पहले अलग कक्ष में पद्मभूषण महाशय धर्मपाल गुलाटी जी की जीवन्त प्रतिमा सोफे पर उसी रूप में विराजमान थी, जैसा वातावरण उनके कार्यालय में हुआ करता था। इस कक्ष में माननीय राजीव जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन किया गया।

परन्तु महाशय धर्मपाल जी की प्रतिमा के पीछे पर्दा क्यों था? उत्सुकता थी। न्यास अध्यक्ष अशोक आर्य जी ने पर्दा हटाया। दृश्य अत्यन्त सुंदर था, पुत्र ने पुत्रधर्म का पालन करते हुए, पुत्र संज्ञा को सार्थक करते हुए, अपने पिता के मार्ग पर चलने का संकल्प लिया था। पिता के पीछे पुत्र का चित्र था। पिता-पुत्र का वह दृश्य ऐसा था कि कोई दृष्टि हटा नहीं पा रहा था।

इसके पश्चात् सबके कदम १८ क्रांतिकारियों की ओर बढ़े।

18 क्रांतिकारी

सबसे पहले प्रातःकालीन वातावरण में श्याम जी कृष्ण वर्मा, लंदन स्थित इंडिया हाउस के प्रांगण में पुस्तक का अध्ययन करते हुए दिखाई देते हैं। उनके चेहरे पर गंभीर चिंतन की रेखाएँ हैं मानो भारत की स्वतंत्रता की रणनीति अभी-अभी शब्दों में ढलने वाली हो।

अगले कक्ष में स्वनामधन्य ठाकुर केसरी सिंह बारहट अपनी हवेली के कक्ष में बैठकर वीररस से ओतप्रोत कविता लिख रहे हैं। "चेतावनी री चूंग्टियाँ" की वही पंक्तियाँ, जिन्होंने महाराणा फतेह सिंह को अंग्रेज दरबार में जाने से विरत कर दिया था मानो कागज से उठकर वातावरण में गूँज रही हों।

एक ओर किशोरवय के अमर शहीद खुदीराम बोस का दृश्य है। किंग्सफोर्ड की बग्घी पर बम फेंकते हुए। चेहरे पर अद्भुत तेज, आँखों में ज्वाला, और मातृभूमि के लिए प्राण अर्पण का अटूट संकल्प। वहीं अंडमान की सेल्युलर जेल में विनायक दामोदर सावरकर कठोर श्रम करते हुए दिखाए गए हैं। तेल निकालने की कोल्हू-चक्की के बीच भी उनके चेहरे पर निराशा नहीं, बल्कि क्रांति का संकल्प स्पष्ट दिखाई देता है। यह दृश्य दर्शाता है कि स्वतंत्रता तिल-तिल कर, तपकर प्राप्त हुई है।

दिल्ली के चाँदनी चौक का दृश्य, रोलेट एक्ट के विरोध में जुलूस का नेतृत्व करते हुए स्वामी श्रद्धानंद। जब अंग्रेज अधिकारी चेतावनी देते हैं- "रुक जाओ, नहीं तो गोली मार देंगे", तब यह निर्भीक संन्यासी अपना वक्ष आगे कर कहता है- "पहले मुझे गोली मारो।" इस साहस को देखकर स्वयं अंग्रेज अधिकारी किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं।

अदालत का दृश्य- मदन लाल धींगरा निर्भीक भाव से खड़े हैं। न्यायाधीश के प्रश्न पर उनका उत्तर गूँजता है- "जब कोई देश किसी अन्य देश पर बलपूर्वक अधिकार कर ले, तो पराधीन देश के लोगों का कर्तव्य है कि वे उस दासता की जंजीरों को तोड़ें। मैं वही कर रहा हूँ। मैं एक निर्धन पुत्र हूँ, अपनी भारत माँ को देने के लिए मेरे पास रक्त के अतिरिक्त क्या है? मैं वही अर्पित कर रहा हूँ।"

आगे बढ़ते ही अल्फ्रेड पार्क का दृश्य सजीव हो उठता है। चन्द्रशेखर आजाद चारों ओर से घिरे हैं। अंतिम गोली शेष है। अपनी प्रतिज्ञा- "मैं आजाद था, आजाद हूँ और आजाद रहूँगा" का पालन करते हुए वे स्वयं को गोली मार लेते हैं। यह दृश्य देखते ही दर्शकों की आँखें नम हो उठती हैं।

एक अन्य कोण में सुभाष चन्द्र बोस आजाद हिंद फौज के संगठन का आह्वान करते हुए दिखाई देते हैं। उनका उठाया हुआ हाथ मानो आज भी युवाओं को पुकार रहा है - "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"

क्रांतिकारी संकल्प का एक और दृश्य जब सरकारी खजाने का ताला किसी से नहीं खुल रहा था और पकड़े जाने का भय था, तब अशफाकुल्ला खान एक ही प्रहार में ताला तोड़ देते हैं। यह केवल बल नहीं था यह

स्वतंत्रता के प्रति अदम्य विश्वास था।

वहीं भगत सिंह का मानवीय पक्ष भी अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रदर्शित है। वे मानव-मात्र की समानता में विश्वास रखते थे। जेल में सफाई करने वाले कर्मचारी को वे "बेबे" कहकर संबोधित करते थे। जब लोगों ने पूछा तो उनका उत्तर था- "जिस प्रकार मेरी माता ने मेरा मल-मूत्र साफ किया, वैसे ही ये करते हैं। फिर मैं इन्हें 'बेबे' क्यों न कहूँ?" यह दृश्य बताता है कि ये क्रांतिकारी केवल अंग्रेजों को उखाड़ फेंकना नहीं चाहते थे, बल्कि भारत के सामाजिक पुनर्निर्माण का भी संपूर्ण दर्शन उनके पास था।

एक ओर ठाकुर रोशन सिंह का दृश्य है शस्त्र क्रय हेतु संसाधन जुटाने के लिए जोखिम उठाते हुए। दूसरी ओर भाई परमानंद का त्यागपूर्ण संघर्ष, कारावास की अमानवीय यातनाओं के बीच भी अडिग आत्मबल।

आगे बढ़ते ही एक गंभीर, तेजस्वी व्यक्तित्व दिखाई देता है; करतार सिंह सराभा। किशोर आयु, परन्तु विचारों में प्रौढ़ता। गदर पार्टी के साहित्य के साथ, भारत में सशस्त्र क्रांति की तैयारी करते हुए। ऐसा प्रतीत होता है मानो वे आज भी युवाओं से कह रहे हों- "देशभक्ति केवल भावना नहीं, जीवन का संपूर्ण समर्पण है।" मात्र १९ वर्ष की आयु में फाँसी के फंदे को हँसते-हँसते स्वीकार करने वाला यह सिंह-हृदय बालक, गैलरी में अद्भुत तेज बिखेरता है।

इन सब दृश्यों को देखकर उपस्थित गणमान्य अतिथियों के मुख से "वाह! वाह!" के अतिरिक्त कुछ नहीं निकल रहा था। स्पष्ट है यह केवल संग्रहालय नहीं है यह राष्ट्रचेतना का तीर्थ है।

लोगों की भावना को अगर शब्द देना चाहूँ तो लिखता हूँ ये क्रांतिकारी केवल अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकना नहीं चाहते थे; उनके पास भारत के नवनिर्माण का स्पष्ट दर्शन था- सामाजिक समता, राष्ट्रीय स्वाभिमान, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और आत्मनिर्भर भारत का स्वप्न।

राष्ट्र मंदिर की इस क्रांति-गैलरी में प्रवेश करना मानो एक तीर्थयात्रा है- जहाँ प्रत्येक प्रतिमा कहती है- "स्वतंत्रता केवल प्राप्त नहीं की जाती, निरंतर साधना करनी पड़ती है।"

इन दृश्यों को देखकर उपस्थित सभी गणमान्य- विधायक, पूर्व विधायक, वरिष्ठ नेता सभी उल्लसित थे।

महर्षि दयानन्द का शयन कक्ष

नवलखा महल प्रवास के मध्य महर्षिवर प्रथम तल पर स्थित इस कमरे में निवास करते थे संग्रहालय के अंत में अवस्थित इस कमरे को इसी रूप में संरक्षित करते हुए एक पलंग पर ध्यानमग्न उनकी प्रतिमा विराजमान है कमरे में एक कुर्सी और एक गोल टेबल रखी हुई है। श्रद्धालुजन महर्षि की स्मृति में डूबकर अश्रुपूर्ण नयनों से इस दृश्य को निहारते नहीं अघाते।

महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास

इसी तल पर जहाँ पुस्तकालय है वहीं पर महर्षि दयानन्द जी के २० ग्रंथों को उनके कथानक में से, उनकी विषय वस्तु से सार लेकर उसे चित्रों में ढालकर बहुत ही सुंदर रूप से प्रस्तुत किया है। जहाँ अधिकांश लोगों को महर्षि दयानन्द के ग्रंथों के नाम तक नहीं पता वहां इस प्रकार की प्रस्तुति से आशा की जाती है कि न केवल सिर्फ नाम बल्कि उसमें क्या कुछ है, यह भी लोगों को ज्ञात हो सकेगा और यह भी कि इस ग्रंथ की रचना कब

हुई, कहाँ हुई इत्यादि।

मुख्य पंडाल का गरिमामय आयोजन

मुख्य पंडाल में जब माननीय राजीव गुलाटी जी पहुँचे, वहाँ पहले से ही सत्र चल रहा था। अनेकों संन्यासियों और विद्वानों ने महर्षि दयानन्द के राष्ट्रीय एवं क्रांतिकारी भावों को नमन करते हुए राष्ट्र मंदिर में प्रदर्शित उनके इन १८ मानस-पुत्रों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

यह अत्यंत आवश्यक था कि जिस महान् व्यक्तित्व के अर्थ-सहयोग और प्रेरणा से आर्य जगत् में इस प्रकार का अभूतपूर्व प्रकल्प साकार हुआ, उनका लोक-अभिनन्दन किया जाए। इसी क्रम में यह सम्मान समारोह न्यास के संरक्षक, राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त न्यायमूर्ति सज्जन सिंह जी कोठारी के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की गरिमा देखते ही बनती थी।

सर्वप्रथम वैदिक कन्या विद्यालय, आबू रोड की छात्राओं द्वारा स्वागत-गीत नृत्य सहित प्रस्तुत किया गया। न्यास के संगठन के ३४ वर्ष पूर्ण होने के प्रतीक स्वरूप ३४ किलो की पुष्पमाला से माननीय राजीव गुलाटी जी एवं उनके परिवार का अभिनंदन किया गया।

अभिनंदन-पत्र न्यास अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने पढ़ा तथा माननीय गुलाटी जी को ओ३म् के अंकन युक्त शंख एवं महाराणा प्रताप का चित्र भेंट किया गया।

इस अवसर पर माननीय राजीव गुलाटी जी ने अत्यंत मार्मिक वक्तव्य दिया, जिसे हम इस पत्रिका में अविकल रूप से अलग से प्रकाशित कर रहे हैं।

''एक शाम महर्षि दयानन्द के नाम''

सायंकालीन सत्र में "वंदे मातरम्" के डेढ़ सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में अखंड वंदे मातरम् का भव्य नृत्य-गान प्रस्तुत किया गया। कोपल गर्ग, युक्ति गर्ग, एंजल सुखवानी, काजल राव, शम्भू रेगर, किंजल पंडित एवं अनुषा शर्मा की प्रस्तुति ने दर्शकों का मन मोह लिया।

"अमृत रस बरसे" शीर्षक से भजनों का कार्यक्रम मुंबई से पधारे श्री विवेक द्वारा प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं पर आधारित नाटक "सत्यार्थ बोध" प्रस्तुत किया गया, जिसके निर्देशक श्री मनीष शर्मा थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का 100वाँ बलिदान वर्ष

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज के बलिदान का १००वां वर्ष चल रहा है। आर्य समाज में स्थान-स्थान पर इस निमित्त कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के दूसरे दिन भी इसी विषय पर विशेष सत्र रखा गया।

इस सत्र की अध्यक्षता स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य थे तथा संचालन राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री आचार्य जीववर्धन शास्त्री ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री विनोद बंसल, राष्ट्रीय प्रवक्ता, विश्व हिंदू परिषद् उपस्थित थे।

सभी विद्वानों ने स्वामी श्रद्धानंद जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। दयानन्द पैराडाइज विद्यालय, आबू रोड़ के विद्यार्थियों द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन के विभिन्न प्रसंगों पर आधारित अत्यंत सुंदर नाटिका प्रस्तुत की गई।

महोत्सव का समापन न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल जी तापड़िया के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

गुलाटी दंपति की अनुकरणीय विनम्रता

वृक्ष पर जितने अधिक फल लगते हैं वह उतना ही नीचे झुक जाता है, यही बात गुलाटी दंपति के साथ है। मंच पर पहुंचते ही एक ओर जहाँ माननीय राजीव गुलाटी जी ने वहाँ उपस्थित ५० से ऊपर संतों के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लिया तो दूसरी ओर माननीया ज्योति गुलाटी जी ने सभी को चरण स्पर्श करते हुए गुलाटी परिवार की ओर से पुष्पम पत्रम के रूप में सादर भेंट प्रदान की। संतों ने भी संचालक अशोक आर्य के निवेदन पर खड़े होकर हृदय के अंत स्थल से गुलाटी परिवार को आशीर्वाद प्रदान किया।

अद्भुत व्यवस्था : अनुकरणीय आयोजन

समारोह की भव्यता ऐसी थी कि हजारों आगंतुकों के मुख से एक ही बात निकल रही थी

"सौंदर्य तो अभिभूत कर ही रहा है, पर व्यवस्था इतनी मुकम्मल है कि उसका वर्णन शब्दों में संभव नहीं।"

आवास व्यवस्था न्यास के स्टाफ, एनएमसीसी यूथ तथा Dermadent क्लिनिक के सहयोगी दल द्वारा अत्यंत सुव्यवस्थित ढंग से की गई। जो लोग बिना पूर्व सूचना के भी पहुँच गए थे, उन सैकड़ों आगंतुकों को भी निराश नहीं किया गया।

यद्यपि यह विशेष रूप से निवेदन करना चाहूँगा कि यदि पूर्व-पंजीकरण की व्यवस्था हो, तो उसका पालन अवश्य किया जाना चाहिए। इससे व्यवस्थापकों को सुविधा होती है और आगंतुकों को भी पूर्व में यह ज्ञात हो जाती है कि उन्हें कहाँ ठहरना है। फिर भी इन युवा कार्यकर्ताओं को साधुवाद, जिन्होंने एक भी शिकायत ऊपर तक नहीं आने दी और सभी को संतुष्ट एवं सम्मानजनक आवास व्यवस्था प्रदान की।

भोजन व्यवस्था तो अद्भुत थी। इस बार भोजन व्यवस्था नवलखा महल परिसर के स्थान पर समोरबाग वाटिका में की गई। लोगों का कहना था कि विवाह समारोहों में भी ऐसा विविधतापूर्ण मेन्यू देखने को नहीं मिलता। तरह-तरह के मॉकटेल, फल, चाट एवं विविध व्यंजन। परंतु केवल मेन्यू की विविधता ही विशेष नहीं थी, बल्कि हजारों लोगों ने अनुशासनपूर्वक और सम्मानपूर्वक भोजन किया, यही सबसे बड़ी बात थी।

सुसज्जित पंडाल, मनमोहक सजावट, ५० से अधिक संन्यासियों का आशीर्वाद, लगभग ३० विद्वानों का संबोधन और राष्ट्र मंदिर प्रकल्प के प्रति जन-जन में जाग्रत होता शुभ-संकल्प।

सभी के मन में यह दृढ़ निश्चय था कि राष्ट्र मंदिर का सन्देश जन-जन तक पहुँचाया जाएगा। आने वाले समय में जो भी उदयपुर आए, उससे आग्रह किया जाएगा कि वह नवलखा महल ऋषि की तपोभूमि, सत्यार्थ प्रकाश की रचना-स्थली, अवश्य जाए।

यह केवल प्रत्येक भारतीय से ही नहीं, अपितु प्रत्येक मानव से हमारा विनम्र निवेदन है।

विनम्र क्षमायाचना

यह तो हमारी अपनी दृष्टि से प्रस्तुत किया गया विवरण है। इतने बड़े समारोह में यदि कहीं कोई न्यूनता रह गई हो, किसी भाई-बहन को हमारी या हमारी टीम की ओर से कोई असुविधा हुई हो, तो हम हृदय से क्षमाप्रार्थी हैं। कृपया अपने उदार हृदय से हमें क्षमा करने का कष्ट करें।

महाशय राजीव गुलाटी जी के उदयपुर आगमन पर न्यास अध्यक्ष श्री अशोक आर्य एवं मन्त्री श्री भवानीदास आर्य द्वारा हवाई अड्डे पर स्वागत करते हुए

हवनकुण्ड में आहुति देते न्यास के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री विजय धर्मा एवं किरण शर्मा

माँ शारदा आर्य समिति, उदयपुर द्वारा मुख्य अतिथि का विहंगम स्वागत

न्यास के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री विजय शर्मा द्वारा राजीव गुलाटी जी का तिलक करके स्वागत

न्यास के संरक्षक न्यायमूर्ति एस. एस. कोठारी जी राजीव गुलाटी का अभिनन्दन करते हुए

न्यासी श्री मोतीलाल आर्य, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री महेश गोयल न्यास की आयु के बराबर ३४ किलो का माला पहनाते हुए

न्यास अध्यक्ष श्री अशोक आर्य एवं पत्नी श्रीमती आभा आर्या के साथ गुलाटी परिवार का अभिनन्दन करते हुए

श्री राजीव गुलाटी अपने पूज्य पिताजी (स्मृतिशेष) महाशय धर्मपाल जी गुलाटी की भव्य प्रतिमा को लोकार्पित करते हुए साथ में न्यास अध्यक्ष श्री अशोक आर्य

राष्ट्र मन्दिर लोकार्पण हेतु जाते हुए

राष्ट्र मन्दिर का लोकार्पण करते हुए

दयानन्द पैराडाइज विद्यालय के छात्र मुख्य अतिथि के समीप मलखम प्रदर्शन करते हुए

श्री अशोक आर्य के परिवारजनों का अभिनन्दन स्वीकार करते हुए

नवनिर्मित राष्ट्र मन्दिर का अवलोकन करते हुए

स्मृति चिह्न महाराणा प्रताप भेंट

भामाशाह का हाथ पुरुषार्थ के साथ

आचार्य धनंजय, डॉ. आयुषी राणा, श्री अरुण अग्रोल, स्वामी प्रणवानन्द जी

कत्थक नृत्य द्वारा मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए

प्रफुल्ल मुद्रा में महाशय राजीव गुलाटी जी एवं श्रीमती ज्योति गुलाटी जी

सुश्री हिरण्या गुलाटी एवं वान्या गुलाटी जी का अभिनन्दन

क्रान्तिवीर अशफाक के स्टेच्यू का अवलोकन करते हुए

महाशय राजीव गुलाटी जी अभिनन्दन-पत्र स्वीकार करते हुए

राजीव जी गुलाटी परिवार के साथ अपने पूज्य पिताजी की प्रतिमा के पास

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य

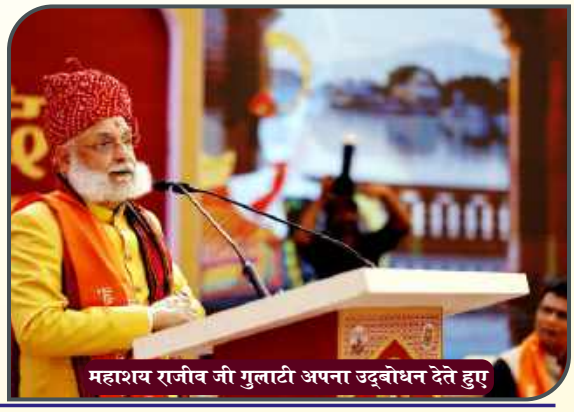

महाशय राजीव जी गुलाटी अपना उद्बोधन देते हुए

Wintage Rolls Royce में महाशय राजीव गुलाटी जी एवं श्रीमती ज्योति गुलाटी जी

अमृत रस बरसे

लोकार्पण समारोह में पधारे संन्यासी वृन्द

महाशय राजीव गुलाटी जी का आर्य महिलाओं द्वारा हाथ उठाकर अभिवादन

श्री अशोक आर्य जी का सम्मान करते हुए स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती

श्री अशोक आर्य जी का अभिनन्दन-पत्र द्वारा सम्मान

राष्ट्र मन्दिर के ऊपर निर्मित पुस्तक क्रान्ति का लोकार्पण

ऋषि प्रसाद का आनन्द लेते हुए आर्यजन

॥ ओ३म् ॥

अभिनंदन पत्र

माननीय श्री राजीव गुलाटी जी

चेयरमैन एवं प्रबन्ध निदेशक, एम.डी.एच. मसाला उद्योग, दिल्ली की सेवा में

सादर अभिनन्दनम् !

संस्कार, सेवा और समर्पण के प्रतीक महाशय राजीव गुलाटी जी!

आपश्री ने अपने पारिवारिक संस्कारों में निहित अपने पूज्य पिता पद्मभूषण महाशय धर्मपाल गुलाटी जी से दान, सेवा और राष्ट्र-निष्ठा की परम्परा और पूज्या माता लीलावन्ती जी से प्राप्त मानवीय संस्कारों को न केवल आत्मसात किया है, अपितु उसे नवीन आयाम प्रदान कर समाज के समक्ष एक प्रेरक उदाहरण स्थापित किया है।

मान्यवर ! भारतीय संस्कृति की दीर्घ परम्परा पर दृष्टि डालते हैं, तो कुछ व्यक्तित्व ऐसे दृष्टगत होते हैं, जिनका जीवन केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित न रहकर समाज, संस्कृति और राष्ट्र के व्यापक हितों से जुड़ जाता है। आपश्री भी इसी श्रेणी के, वेद के आदेश और महर्षि दयानन्द के निर्देश, कि केवल 'अपनी उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए' का अनुसरण करने वाले विरले व्यक्तित्वों में से एक हैं। मान्यवर ! आपका जीवन यह सुस्पष्ट करता है कि दान केवल धन का नहीं, दृष्टि का विस्तार होता है। इसी भाव को भारतीय मनीषा ने सूत्र रूप में कहा है:-

दानं तदेव सफलं मन्ये, येन समाजोऽभिवर्धते। राष्ट्रं यत्संस्कृतिं नीत्वा, धर्मपथे प्रतिष्ठते।।

माननीय देवता स्वरूप महाशय राजीव गुलाटी जी! आप इसी श्रेय-पथ का अनुगमन करते हुए, उन संस्थाओं और प्रकल्पों को अर्थ-सहयोग प्रदान कर रहे हैं, जो समाज, राष्ट्र और संस्कृति को उन्नति की दिशा में अग्रसर करने में संलग्न हैं। आपने अपनी उदार दान-सरिता से उन संस्थाओं को सिंचित, पल्लवित और पुष्पित किया है, जो शिक्षा, संस्कार, धर्म और राष्ट्रचेतना की मौन साधना में निरत हैं। गुरुकुलों का उत्थान, शिक्षण संस्थाओं का सशक्तिकरण, आर्य समाज से संबद्ध कार्यों का संरक्षण तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती से जुड़े सांस्कृतिक स्मारकों का संवर्धन, ये सभी आपके जीवन की धर्मनिष्ठ प्रतिबद्धता के सजीव प्रमाण हैं।

मान्यवर ! नवलखा महल स्थित राष्ट्र मन्दिर जैसे राष्ट्र अर्चना के भावों से ओतप्रोत सांस्कृतिक केन्द्र का निर्माण आपके उसी दृष्टिसम्पन्न अर्थ-सहयोग का परिणाम है, जिसमें राष्ट्रप्रेम, इतिहास-बोध और भावी पीढ़ियों के लिए चेतना का दीप प्रज्वलित करने की आकांक्षा निहित है। **यह केवल एक भवन नहीं, बल्कि स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति कृतज्ञ राष्ट्र की जीवन्त अभिव्यक्ति है, जो आपके उदार आशीर्वाद से फलीभूत हुई है।**

हे धर्मनिष्ठ विभूति ! आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के प्रति आपका समर्पण केवल वैचारिक नहीं, बल्कि क्रियात्मक है। आपने विचार को कार्य में, भावना को संरचना में और श्रद्धा को स्थायित्व में रूपान्तरित किया है। आपकी उदारता की पृष्ठभूमि में सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् का आदर्श समाविष्ट है, **"सबसे सुन्दर सबसे प्रेरक" आपका प्रिय वाक्य है, उसी का प्रमाण यह राष्ट्र मन्दिर है।**

हे वैदिक धर्मानुरागी ! युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को दिग्दिगन्त में नवाचारों के माध्यम से प्रसारित करने के प्रबल आकांक्षी ! आपश्री ने मेवाड़ की इस वीरप्रसू धरा पर, विश्व प्रसिद्ध झीलों की नगरी उदयपुर के हृदय स्थल में अवस्थित इस रमणीय गुलाब बाग के मध्य, युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द की कर्मस्थली और विश्व मानवता को आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करने वाले सत्यार्थ प्रकाश की रचना स्थली पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अनुरोध को स्वीकार कर सिलीकॉन म्यूजियम के रूप में, माँ भारती के चरणों में अपने प्राणों को न्योछावर कर देने वाले महर्षि दयानन्द के मानस पुत्रों के व्यक्तित्व और कृतित्व को राष्ट्र मन्दिर के रूप जीवन्त कर दिया है, **इस तथ्य को इतिहास निश्चित रूप से स्वर्णिम अक्षरों में लिखेगा और आपकी यह देन भारत के नौनिहालों को राष्ट्र प्रेम का सन्देश देती हुई अपने गौरवशाली इतिहास की अनुभूति कराती रहेगी।**

हे भामाशाह परम्परा के वाहक ! वस्तुतः वे धनपति धन्य हैं जो राष्ट्र चेतना के उन्नयन के लिए अपने साधनों को समर्पित करते हैं। किसी संस्कृत कवि ने ठीक ही लिखा है

वीरात्मभ्यः कृतज्ञतायै, राष्ट्रभावाय समर्पितम्। एतद् दानं भावी सन्ततीनां चेतनां जागरयेत्।।

निश्चय से आप ऐसे ही महामना है।

हे महामना ! आपश्री का सम्मान करने के लिए शब्दों के पुष्प चुनने में हम अपने को सर्वथा असहाय अनुभव करते हैं, क्योंकि शब्द, हमारी भावना को अभिव्यक्त करने में असमर्थ हैं अतएव टूटे-फूटे शब्दों के इस संग्रह को स्वीकार कर हमें अपना स्नेहभाजन बनाए रखें, यही प्रार्थना है।

'राष्ट्र मन्दिर' के लोकार्पण के इस पावन अवसर पर हम सबकी ओर से आपको यह अभिनन्दन पत्र सादर समर्पित करते हुए यह कामना करते हैं कि आपकी दान-धारा यूँ ही राष्ट्र, धर्म और संस्कृति की भूमि को सिंचित करती रहे तथा आने वाली पीढ़ियाँ आपके कार्यों से प्रेरणा प्राप्त करती रहें।

आपको शतायु, यशस्वी एवं धर्मपथ पर अविचल रहने की मंगलकामनाएँ। ..... सादर

शुभेच्छु

अशोक आर्य	भवानीदास आर्य	नारायण मित्तल
अध्यक्ष	मंत्री	कोषाध्यक्ष

एवं समस्त न्यासीगण

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल गुलाबबाग, उदयपुर

तिथि : फाल्गुन शुक्ल पंचमी, विक्रम संवत् : 2082 (तदनुसार 22 फरवरी 2026)

ओ३म्

अभी हाल में ही दिनांक २२ व २३ फरवरी २०२६ को श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से राष्ट्र मन्दिर लोकार्पण समारोह में जाने का अवसर मिला। नवलखा महल में निर्मित यह राष्ट्र मन्दिर वस्तुतः सराहनीय, प्रेरक व दर्शनीय स्थल है। सिलीकॉन से निर्मित क्रान्तिकारियों की मूर्तियाँ इतनी सजीव प्रतीत होती हैं, मानो वे जीवित ही हैं। सिर से पैर के नख तक सभी अङ्ग वास्तविक प्रतीत होते हैं। क्रान्तिकारियों का चयन भी बहुत बुद्धिमत्ता के साथ किया गया है।

वर्तमान में सम्पूर्ण आर्यजगत् में नवलखा महल ही एकमात्र दर्शनीय और प्रेरक स्थल है, जहाँ देश-विदेश से हजारों पर्यटक धन व्यय करके प्रतिवर्ष आते हैं और थोड़े समय में ही आर्यसमाज, ऋषि दयानन्द तथा क्रान्तिकारियों के विषय में बहुत कुछ जानकारी लेकर जाते हैं। इस सम्पूर्ण प्रकल्प के प्रणेता आदरणीय श्री अशोक जी आर्य हैं, जो श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष हैं। वे राजस्थान सरकार में बहुत ईमानदार व कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी रहे हैं। उसी ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा व समर्पण से वे लम्बे समय से इस न्यास की सेवा पूर्ण निष्काम भाव से कर रहे हैं। फिर करें भी क्यों नहीं, उन्हें अपने पूज्य पिता जी श्रीमान् आचार्य प्रेमभिक्षु जी से ऐसे संस्कार विरासत में प्राप्त हुए हैं।

श्री अशोक जी आर्य की कल्पनाशीलता व क्रियात्मक बुद्धि अद्भुत है। उन्होंने अपने स्वास्थ्य की चिन्ता किए बिना महीनों से रात-दिन परिश्रम करके इस प्रकल्प को साकार रूप दिया है। इसके लिए वे बहुत ही साधुवाद के पात्र हैं। उनके साथ उनके सुपुत्र डॉ. प्रशान्त जी अग्रवाल एवं समस्त परिवार भी छाया की भाँति उनके साथ रहता है। उनके न्यासी श्री भवानीदास जी आर्य, श्री डॉ. अमृतलाल जी तापडिया, श्री नारायणलाल जी मितल, श्री भँवरलाल जी आर्य आदि तथा सम्पूर्ण स्टाफ धन्यवाद व प्रशंसा का पात्र है।

श्री राजीव जी गुलाटी उनके लिए भामाशाह बनकर आये, एतदर्थ वे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। अब श्री अशोक जी आर्य से यही निवेदन है कि वे नवलखा महल के कार्य में अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा न करें, क्योंकि उनका पूर्ण स्वस्थ रहना सबके लिए हितकर है।

- आचार्य अग्निव्रत
प्रमुख, वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान
(श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास द्वारा संचालित)
वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल
जिला-जालोर (राजस्थान) - ३४३०२९

22 फरवरी 2026 को नवलखा महल, उदयपुर में राष्ट्र मन्दिर के उद्घाटन समारोह में मुझे सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह क्षण अत्यन्त भावुक और गर्व से भर देने वाला था। विशेष रूप से वहाँ स्थापित क्रान्तिकारियों की सिलिकॉन प्रतिमाएँ देखकर मन द्रवित हो उठता है। वे प्रतिमाएँ इतनी सजीव प्रतीत हो रही थीं, मानो अभी बोल उठेंगी और अपने संघर्ष, त्याग तथा बलिदान की गाथा स्वयं सुनाने लगेंगी।

इन महान् क्रान्तिकारियों ने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपने प्राणों का बलिदान किया, कठोर यातनाएँ सहीं, कारावास भोगा और अपने निजी जीवन का सुख त्याग दिया। उनके अदम्य साहस, राष्ट्रभक्ति और संकल्प को जिस प्रकार इन प्रतिमाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, वह सचमुच सराहनीय है। उनके संघर्षों और आदर्शों को इससे बेहतर ढंग से प्रदर्शित करना शायद सम्भव नहीं था।

इस सम्पूर्ण प्रस्तुति के पीछे न्यास के आधार आदरणीय अशोक आर्य जी की अद्भुत कल्पनाशक्ति, समर्पण और निरन्तर परिश्रम स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस भव्य म्यूजियम का निर्माण भामाशाह श्रीमान् राजीव जी गुलाटी के उदार आर्थिक सहयोग के कारण सम्भव हो पाया है। उनके समर्पण और राष्ट्रहित की भावना ने इस स्वप्न को साकार रूप दिया है। ऐसे सज्जनों का सहयोग ही किसी महान सांस्कृतिक और राष्ट्रीय प्रयास को सशक्त आधार प्रदान करता है।

बड़ी संख्या में आने वाले दर्शकों, विशेषकर युवाओं के लिए यह स्थान प्रेरणा का सशक्त केन्द्र बनेगा। यहाँ आकर प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यों का बोध अवश्य करेगा। ईश्वर से प्रार्थना है कि न्यास प्रमुख को दीर्घायु और उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करें तथा यह राष्ट्र मन्दिर आने वाली पीढ़ियों को सदैव राष्ट्रभक्ति, त्याग और सेवा की प्रेरणा देता रहे। -

विशाल आर्य, प्राचार्य
वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान, (श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास द्वारा संचालित)
वेद विज्ञान मन्दिर, भागलभीम, भीनमाल, जिला-जालोर (राजस्थान) - 343029

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास; नवलखा महल, उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के पावन अवसर पर 'राष्ट्र–मन्दिर' का लोकार्पण हुआ, जिसकी मैं स्वयं साक्षी बनी। वस्तुतः सनातन संस्कृति में मन्दिरों की एक बृहद् शृंखला दिखाई देती है, मन्दिर समाज के पथप्रदर्शक एवं सामाजिक समरसता की प्रेरणा देने वाले केन्द्रीय स्थान हुआ करते हैं। भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में विविध इष्टों की उपासना हेतु असंख्य मन्दिर विद्यमान हैं परन्तु उदयपुर स्थित नवलखा महल में 'राष्ट्र–मन्दिर' भारतवर्ष का पहला ऐसा मन्दिर है जिसकी संकल्पना 'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः' के अनुरूप है। मैंने जैसे ही राष्ट्र–मन्दिर में प्रवेश किया तो देखा कि यहाँ जिन अमर हुतात्माओं की सिलिकॉन प्रतिमाएँ लगीं हुईं हैं वे बिल्कुल ऐसी दिखाई देती हैं जैसे साक्षात् हम उन महापुरुषों को सजीव देख रहे हों, इतनी सुन्दर प्रतिमाएँ हैं कि उनमें सजीवटता प्रदर्शित होती है। बात केवल इतनी सी नहीं है कि ये प्रतिमाएँ सुन्दर कितनी हैं ? महत्वपूर्ण ये है कि इस राष्ट्र मन्दिर में प्रतिमाएँ उन महापुरुषों की हैं जिन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान भारत माता को स्वतन्त्र कराने में दे दिया, लेकिन इतिहास में जो आदर का स्थान इन अमर हुतात्माओं का होना चाहिए था उसकी सत्ताधारियों द्वारा उपेक्षा कर दी गई। मैं धन्यवाद देना चाहूँगी नवलखा महल के यशस्वी अध्यक्ष आदरणीय अशोक आर्य जी एवं उनकी पूरी टीम को जिन्होंने इस मन्दिर में इन्हें स्थान दिया। नीरा आर्या को जिन्होंने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जीवन रक्षा के लिए अपनी माँग का सिन्दूर मिटाने का निर्णय लेने में एक क्षण की भी देरी नहीं की, लेकिन इतिहास आज भुला बैठा है ऐसी वीरांगना को। मैंने देखा कि इन महापुरुषों में सरदार भगत सिंह की प्रतिमा के साथ उनकी उस घटना का भी जिक्र लिखा है, जिसमें लाहौर सेंट्रल जेल में सफाई कर्मी बोगा के साथ जिस आत्मीयता से भगत सिंह ने बोगा में मातृत्व को देखा और तत्कालीन अस्पृश्यता के खिलाफ व्यावहारिक क्रान्ति पेश की। साथ ही इस मन्दिर में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, गेंदालाल दीक्षित, ठाकुर रोशन सिंह, भाई परमानन्द, पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल, स्वामी श्रद्धानन्द, श्यामजी कृष्ण वर्मा, ठाकुर केसरी सिंह आदि–आदि अनेक महापुरुषों की प्रतिमाओं के साथ–साथ उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं की चर्चा भी लिखी हुई है जिसका उल्लेख सामान्यतः इतिहास उपेक्षित कर चुका है। मैं नवलखा महल के समस्त न्यासियों एवं सहयोगियों को धन्यवाद देना चाहूँगी जिन्होंने इस प्रकार के राष्ट्र मन्दिर का निर्माण किया जो समाज को अमर हुतात्माओं की ज्वलन्त चेतना के साथ अनुभव करने का अवसर प्रदान करेगा।

–डॉ. आयुषी राणा

राष्ट्र मंदिर : आर्य जगत् के लिए एक अमूल्य सौगात

राष्ट्र मन्दिर का यह लोकार्पण आर्य जगत् के लिए उदयपुर सत्यार्थ प्रकाश न्यास की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सौगात है। यह स्थान छोटे से लेकर बड़े तक, सभी के लिए दर्शनीय है; प्रेरणास्पद है; और बच्चों के लिए ज्ञान के साथ-साथ स्वस्थ मनोरंजन का भी माध्यम है। सबसे विशेष बात यह है कि यहाँ अत्यन्त सरल भाषा और सहज रूप में जो विचार, प्रोत्साहन और प्रेरणा प्राप्त होती है, उसकी तुलना करना सम्भव नहीं है। निश्चित रूप से पूर्व में जो प्रयास किया गया था, वह भी अपने आप में प्रशंसनीय और उत्कृष्ट था; किन्तु इस समय जो नया प्रकल्प जोड़ा गया है, इस नवीन प्रयास ने तो उसमें चार चाँद लगा दिए हैं। अब यह केवल एक संग्रहालय नहीं रहा, यह एक तीर्थ बन गया है।

तीर्थ का अर्थ क्या है? जहाँ जाकर मनुष्य के जीवन में उत्थान हो, प्रेरणा मिले, जीवन-प्रगति के विचार जागृत हों वही तीर्थ है। आज यहाँ आने वाला प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी प्रकार की प्रेरणा लेकर जाएगा। उसके मन में समाज, राष्ट्र और अध्यात्म के प्रति सकारात्मक भाव जागृत होंगे; उत्साह का संचार होगा। इसी कारण यह स्थान आर्यों का एक पावन तीर्थ बन गया है।

मैं सत्यार्थ प्रकाश न्यास तथा उसके सभी ट्रस्टियों का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ। उन्होंने आर्य जगत् के लिए ऐसा कार्य किया है, जो आर्य विचारधारा के प्रचार-प्रसार, वैदिक संस्कृति के संवर्धन तथा हमारे स्वर्णिम इतिहास को जन-जन तक पहुँचाने में अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा। पुनः बहुत-बहुत धन्यवाद।

इस अवसर पर हजारों की संख्या में विद्वान्, संन्यासी तथा देश के विभिन्न प्रान्तों से आर्यजन उपस्थित हुए। सभी ने इस कार्यक्रम और इस लोकार्पण की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अनेक लोगों द्वारा व्यक्त किए गए विचार अपने आप में अविस्मरणीय हैं और इतिहास के पृष्ठों में अंकित हो चुके हैं।

- प्रकाश आर्य, महू

जीवन्त क्रान्तिवीर : राष्ट्र मन्दिर

मुझे लगता है वह एक ऐतिहासिक क्षण था जब महर्षि दयानन्द सरस्वती नवलखा महल आए और यहाँ विराजमान होकर सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ की रचना की। मेवाड़वासियों के लिए यह अत्यन्त सौभाग्य का विषय है।उन्होंने 'वेदों की ओर लौटो' का सन्देश दिया। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यहाँ आकर समझ में आता है कि भारत कैसा था, समाज कैसा था, और हमारी जीवन-पद्धति क्या थी। जब स्वराज की बात निकली तो 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का उद्घोष हुआ। परन्तु 'स्व' की बात करते हैं तो अपनी पहचान और अपनी संस्कृति का भाव जागृत होता है।

संभवतः उसी विचार से प्रेरित होकर गोविन्द गुरु जी महाराज ने महर्षि दयानन्द से दीक्षा ली और आगे चलकर मानगढ़ धाम आन्दोलन को आगे बढ़ाया। वह आन्दोलन राष्ट्रवाद से जुड़ा भील समाज का एक महत्वपूर्ण अध्याय है।

जब राष्ट्र मन्दिर देखते हैं तो हमारी सभी विभूतियाँ और नायक जीवन्त दिखाई देते हैं। एक बार तो मुझे सन्देह हुआ कि ये प्रतिमाएँ सचमुच जीवित तो नहीं! इतना अद्भुत और जीवन्त निर्माण किया गया है। मैं इस कार्य में सहयोग करने वाले सभी महानुभावों को प्रणाम करता हूँ।

- डॉ. मन्नालाल रावत, सांसद-उदयपुर

नवलखा महल, सत्यार्थप्रकाश न्यास के राष्ट्र मन्दिर लोकार्पण समारोह में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपके कुशल नेतृत्व व प्रेरणा से अत्यन्त सुन्दर कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। एतदर्थ आपको एवं न्यास को कोटिशः बधाई व शुभकामनाएँ।

आपके कुशल नेतृत्व में न्यास का कार्य निरन्तर प्रगतिशील रहे, ऐसी हमारी हार्दिक कामना है।

बहुत समय से अप्राप्य एवं दुर्लभ ग्रन्थ, जो मेरे संग्रह में उपलब्ध था 'शुद्ध महाभारत' (तपोभूमि विशेषांक) की पुरानी प्रति प्रकाशनार्थ आपको प्रदान की गई है। आशा है कि यथाशीघ्र इसका प्रकाशन न्यास द्वारा स्वाध्याय-प्रेमियों के लिए सम्भव हो सकेगा। इसी सद्भावना के साथ आपसे निवेदन किया है।

'शुद्ध रामायण' के पश्चात् 'शुद्ध महाभारत' का प्रकाशन भी सुधी पाठकों के हाथों में पहुँचे, यही शुभकामना है।

आपका शुभेच्छु,
महावीर आर्य
ग्राम बोरदा देव, पोस्ट मकड़ावदा कलाँ
जिला श्योपुर, मध्य प्रदेश - ४७६३३९, मो.: ९७५२८२०९७५

आदरणीय अशोक जी,

नमस्ते।

नवलखा महल का कार्यक्रम ऑनलाइन देखा। अत्यन्त आनन्द आया। हमने इस प्रकार की उत्कृष्ट प्रस्तुति **Madame Tussauds Museum, London** में देखी थी। उसी शैली में आप लोगों ने भी इसे अत्यन्त सुन्दर रूप में निर्मित किया है।

इसे शीघ्र प्रत्यक्ष देखने की अभिलाषा है। आपकी पूरी टीम को हार्दिक बधाई।

इंजी. प्रकाश चंद्र सोनी
पूर्व चीफ इंजीनियर (एमपीईबी) सेवानिवृत्त
संभागीय संचालक (भोपाल संभाग)
सार्वदेशिक आर्यवीर दल, मध्य प्रदेश-विदर्भ, भोपाल

कार्यक्रम की रचना, व्यवस्थाएँ, भव्यता और दिव्यता अद्भुत थी। आपकी समस्त टोली को कार्यक्रम की चहुंमुखी सफलता के लिए बधाई और साधुवाद।

हमने जिन-जिन आगंतुक महानुभावों से चर्चा की, सभी दोनों दिनों के कार्यक्रमों से अभिभूत और अत्यंत प्रसन्न दिखाई दिए। आपका जो प्रयास था, उसकी सार्थकता मीडिया में आए कवरेज से भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

बहुत अच्छा लगा। आप जब भी दिल्ली पधारें, तो अवश्य आइएगा। आपका हार्दिक स्वागत है। पुनः धन्यवाद।

- विनोद बंसल; राष्ट्रीय प्रवक्ता- विश्व हिन्दू परिषद्, दिल्ली

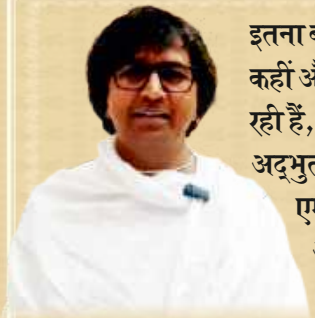

इतना बड़ा गौरव अशोक आर्य जी को ही मिलना था। आर्य जगत में इतना अद्भुत कार्य कहीं और नहीं हो रहा है। बड़ी-बड़ी संस्थाएँ और सभाएँ अपने-अपने स्तर पर कार्य कर रही हैं, किंतु आर्य समाज की दृष्टि से, महर्षि दयानन्द की दृष्टि से नवलखा महल में जो अद्भुत कार्य हुआ है, उसका पूरा श्रेय अशोक आर्य जी को जाता है।

एमडीएच परिवार भी इस कार्य से जुड़ा है। उनके लिए भी बहुत-बहुत साधुवाद और आभार। समस्त आर्य समाज सदैव उनका कृतज्ञ रहेगा।

- आचार्य सोमदेव आर्य, मलारना चौड़

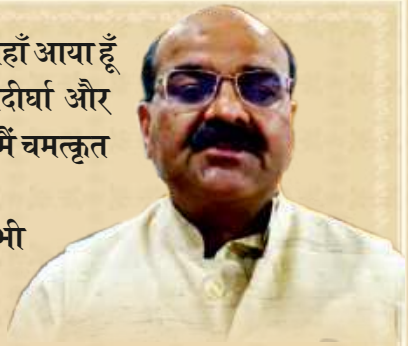

मेरा परिवार पाँच पीढ़ियों से आर्य समाज से जुड़ा है। मैं पहले भी यहाँ आया हूँ और अशोक जी से मिला हूँ। उस समय केवल नीचे की चित्रदीर्घा और संस्कार वीथिका देखी थी। आज राष्ट्र मंदिर का यह प्रकल्प देखकर मैं चमत्कृत हूँ।

देश में क्रांतिकारियों की इतनी सुंदर दीर्घा, वैक्स म्यूज़ियम से भी श्रेष्ठ सिलिकॉन प्रतिमाएँ वास्तव में अद्भुत हैं। गुलाटी परिवार ने जिस प्रकार से इसके लिए दान दिया है, वह प्रेरणादायी है। धन कमाने के साथ उसका सदुपयोग किस प्रकार किया जाए, यह इसका उदाहरण है।

देश की स्वतंत्रता के लिए जिन क्रांतिकारियों ने सर्वस्व अर्पित किया, उनकी जीवन-गाथा को यदि इस प्रकार प्रस्तुत किया जाएगा तो आने वाली पीढ़ी जान सकेगी कि हमने कितनी कुर्बानियों से आज़ादी प्राप्त की है। धन्य हैं वे परिवार जो सहयोग कर रहे हैं, और धन्य हैं अशोक जी व उनकी टीम, जिन्होंने इतनी मेहनत से यह कार्य किया। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

- डॉ. वीरोत्तम तोमर; मेरठ

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा जिस स्थान पर सत्यार्थ प्रकाश की रचना की गई, कालान्तर में राजस्थान सरकार के माननीय भैरोसिंह शेखावत जी ने वह नवलखा महल आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान को प्रदान किया। सभा ने 'श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास' का गठन किया।

न्यास ने १९९२ से अब तक अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं। समय-समय पर नए आयाम जुड़ते गए। अभी दो दिन का यह जो कार्यक्रम था, जिसमें राष्ट्र मंदिर का उद्घाटन भी सम्मिलित था, उसमें देश के कोने-कोने से अनेक लोग उपस्थित हुए।

एमडीएच के निदेशक भाई राजीव जी गुलाटी ने अपने पूज्य पिताश्री महाशय धर्मपाल जी की पावन स्मृति में राष्ट्र मंदिर का निर्माण कर अत्यंत महनीय कार्य किया है। यहाँ से लाखों लोग प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

मैं इस समस्त कार्य के लिए भाई अशोक जी एवं सभी ट्रस्टियों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ और आमजन से निवेदन करता हूँ कि इस स्थान पर आकर इन प्रकल्पों 'चाहे संस्कार वीथिका हो या अन्य' अवश्य देखें। यहाँ देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम के साथ-साथ वेदप्रेम और संस्कारों का भाव भी जागृत होगा। बहुत-बहुत शुभकामनाएँ। धन्यवाद।

- स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती; पूर्व सांसद, सीकर

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल में इस सुंदर राष्ट्र मंदिर के लोकार्पण समारोह में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ। उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित होकर हमने यहाँ देखा कि आज की नई पीढ़ी के लिए यह स्थान एक आदर्श, उत्साह और उमंग का केंद्र बनेगा। यहाँ जो भी छात्र-छात्राएँ दर्शन हेतु आएँगे, वे यह जान पाएँगे कि हमारे पूर्वजों ने समाज और राष्ट्र की रक्षा के लिए किस प्रकार अपना सर्वस्व अर्पित किया।

वे इससे प्रेरणा लेंगे कि हमें भी अपनी तेजस्विता राष्ट्र के प्रति समर्पित करनी चाहिए। आज के समय में इसकी अत्यंत आवश्यकता है। वर्तमान समय में जब वातावरण विकृत होता जा रहा है, ऐसे समय में यदि कोई पथ-प्रदर्शक इस प्रकार का कार्य प्रस्तुत करता है, तो वह हमारे लिए निश्चित रूप से आदर्श स्थापित करता है।

इस न्यास के अध्यक्ष सम्माननीय अशोक आर्य जी एवं उनकी समस्त टीम ने अत्यंत सुंदर कार्य किया है, जिससे समाज और राष्ट्र को नई दिशा मिलेगी। पूर्व में उन्होंने 'सोलह संस्कार' केन्द्र की स्थापना की और अब 'राष्ट्र मंदिर' का निर्माण किया। ये दोनों ही प्रकल्प वस्तुतः महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्य को आगे बढ़ाने में मील का पत्थर सिद्ध होंगे।

यहाँ आने वाले प्रत्येक पर्यटक को यह शिक्षा और जानकारी प्राप्त होगी कि ऋषि दयानन्द ने समाज और राष्ट्र को नई दिशा दी थी। आज भी हमें उसी पथ पर चलने की आवश्यकता है। उनके अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश का लेखन इसी स्थान पर हुआ था। इस ऐतिहासिक स्थल को सुव्यवस्थित और रमणीय पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया गया है, यह सबके लिए अनुकरणीय है।

ऋषि दयानन्द के कार्य हेतु सभी को अपनी-अपनी आहुति यहाँ आकर देनी चाहिए। इन्हीं शब्दों के साथ यहाँ की उत्तम व्यवस्था और समस्त स्टाफ के प्रति मैं हार्दिक धन्यवाद और आभार व्यक्त करती हूँ। यहाँ आकर छात्र और युवा पीढ़ी प्रेरणा व शिक्षा लेकर अपने जीवन और भविष्य को उज्ज्वल बनाएँगे। सधन्यवाद।

-आचार्या डॉ. धारणा शास्त्री

आजादी के बाद हमारे छात्रों को यह इतिहास ठीक प्रकार से पढ़ाया ही नहीं गया। कम से कम दसवीं या बारहवीं कक्षा तक के पाठ्यक्रम में इन क्रांतिकारियों का समुचित समावेश होना चाहिए। चन्द्रशेखर आज़ाद, बिस्मिल जैसे महान क्रांतिकारी भी पाठ्यक्रम में पर्याप्त रूप से नहीं हैं। यहाँ १८ क्रांतिकारियों का प्रदर्शन किया जाना एक अद्भुत और महनीय कार्य है।

- डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

अद्भुत मैं एक ही शब्द कह सकती हूँ, अद्भुत है। हमारे आर्य जगत् के लिए यह दर्शनीय और गौरव की बात है। आज तक आर्य समाज के तत्वावधान में इस प्रकार का कार्य नहीं हुआ। ऐसा संग्रहालय कहीं भी निर्मित नहीं हुआ है।

मैं काफी समय से यहाँ आती रही हूँ। आपका यह प्रयास कोटिशः धन्यवाद का पात्र है। वास्तव में एक ही शब्द में कहूँ तो अद्भुत है।

- उत्तमा यति जी

आज सत्यार्थ प्रकाश न्यास में राष्ट्र मंदिर देखने का अवसर मिला। अत्यन्त भावपूर्ण दृश्य निर्मित किया गया है। ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रतिमाएँ बोल रही हों।

इसके लिए एमडीएच के चेयरमैन श्री राजीव जी, श्री अशोक जी और उनकी टीम को बहुत-बहुत धन्यवाद।

स्वामी देवव्रत जी

माननीय श्री अशोक जी, नमस्ते

हमें आपके विशाल पुरुषार्थ का दर्शन हुआ। हमारा सौभाग्य है कि आपने हमें कार्यक्रम में उपस्थित होने का अवसर प्रदान किया।

आपके पुरुषार्थ एवं भामाशाह एमडीएच परिवार के सहयोग से महर्षि दयानंद सरस्वती जी के पदस्पर्श से पावन हुई उदयपुर की भूमि पर 'राष्ट्र मंदिर' का निर्माण श्रीमद् दयानंद सत्यार्थप्रकाश न्यास द्वारा सम्पन्न हुआ।

इस महान कार्य के लिए आप धन्य-धन्य हैं, और आपकी पूरी टीम भी धन्यवाद की पात्र है।

आपका हार्दिक आभार एवं धन्यवाद।

- उत्तमार्य दंडिमे पुणे, महाराष्ट्र

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे।

निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण: **AC. No.: 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001** में जमा करा कृपया सूचित करें।

'मनीषी चिन्तन'

'सर्वोच्च राष्ट्रमन्दिर'

आर्य जन का राष्ट्र मन्दिर नवलखा।
दयानन्दी दृष्टि का सच्चा सखा।
काम है इसमें न किंचित शोक का।
वेद गर्भित वृक्ष सत्य अशोक का।
तत्वबोधी तान ऋषि का लखलखा।
आर्य जन का राष्ट्र मन्दिर नवलखा।
साधना का सार यह सत्यार्थ का।
नित्य नव भवितव्य वैदिक पार्थ का।
हो गया वह धन्य जिसने भी लखा।
आर्य जन का राष्ट्र मन्दिर नवलखा।
सुसंस्कारों का अनोखा रथ यहां।
देश भक्तों का हठीला पथ यहां।
उदयपुर में स्वाद अमृत का चखा।
आर्य जन का राष्ट्र मन्दिर नवलखा।
सिंह गाता राग भैरव भैरवी।
नित सुमेधा यत्न गैरिक गैरवी।
कलश हँसता नींव का पत्थर रखा।
आर्य जन का राष्ट्र मन्दिर नवलखा।
राष्ट्र की है रीढ़ चेतन तीर्थ स्थल।
दिव्यता की दीप्ति याज्ञिक शेष जल।
नहीं शब्दों में इसे जाये भखा।
आर्य जन का राष्ट्र मन्दिर नवलखा।
यह सनातन सूर्य शाश्वत तान है।
नव्यता के नेत्र वैदिक गान हैं।
यह मनीषी मर्म भेदक बघनखा।
आर्य जन का राष्ट्र मन्दिर नवलखा।
क्षण सदाशय प्रण महाशय प्राण से।
विकसते राजीव कर कल्याण से।
सगुण निर्गुण धर्म धारे अँगरखा।
आर्य जन का राष्ट्र मन्दिर नवलखा।

– प्रोफेसर डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay

BHIM UPI

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

महान् सेवा-यज्ञ में अपने जीवन को स्वाहा करने का वचन देकर स्वामी दयानन्द ने गुरु विरजानन्द से विदा ली और कर्म-क्षेत्र में छलांग लगा दी। ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ते गए, त्यों-त्यों नये-नये अनुभवों और विचारों द्वारा उनकी कार्य-प्रणाली में सुधार आता गया। दुनिया के जीवन की वास्तविकताएँ नंगी होकर सामने आकर खड़ी होती गईं। इन सब अनुभवों के द्वारा स्वामी दयानन्द विश्व के मानस मण्डल के सभी क्षेत्रों के रोगों की नब्ज पकड़ ली, असली रोग की गहराइयाँ समझ में आ गई।

अपनी योग-साधना और कठोर तपस्या द्वारा स्वामी दयानन्द ने उन सभी व्याधियों का निदान खोज डाला और समाज के प्रत्येक रोग की जड़ तक पहुँचकर उनकी गहरी चिकित्सा की। समाज के नस-नस में छुपे हुए कीटाणुओं और विषाणुओं को ढूँढ़कर निकाल फेंका। जिस सच्चे शिव की खोज करने के लिए भरी जवानी में अपना गृह त्याग दिया था और जिसकी खोज में उन्होंने अपने समूचे जीवन को लगाया था, उसकी भी प्राप्ति हो गई। इन सबका निचोड़ सार्वरूप में उन्होंने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिख डाला, जो उनके अनुयायियों का एकमात्र प्रामाणिक मार्गदर्शक बन गया। इसी सत्यार्थप्रकाश को ब्रिटिश साम्राज्य के तत्कालीन गुप्तचर राज्य कर्माचारियों ने आर्यसमाज का बाइबल (Bible of Arya Samaj) की उपाधि दी थी।

अपने मिशन का सत्यार्थप्रकाश और उपदेशों द्वारा धर्म का प्रचार करने तथा अपने अनुयायियों को एकसूत्र में अटूट रूप से जोड़कर रखने के लिए स्वामी दयानन्द ने संस्था के रूप में एक दृढ़ संगठन- आर्यसमाज की स्थापना की। उनके अनुयायियों को एक ऐसा निजी मंच मिल गया, जो सभी कार्यक्रमों और अपने वैदिक संदेशों को विश्वभर में गुँजाने का अचूक अस्त्र-समान साधन सिद्ध हुआ। अब स्वामी दयानन्द को अपने क्रान्तिकारी अभियान की गूंज सुनाने के लिए स्वच्छन्द निर्बाध आकाश में ऊँची से ऊँची उड़ान भरने में कोई उनका सामना करने वाला नहीं रहा, जो भी सामने आया पछाड़ खाकर चारों खाने चित्त गिरा।

सन् १८६६ में एक विशेष घटना घटी। स्वामी दयानन्द जी एक स्थान पर अपने व्याख्यान के द्वारा मृतक श्राद्ध का खण्डन कर रहे थे। तभी एक ब्राह्मण सत्यार्थप्रकाश का प्रथम संस्करण हाथ में लेकर आया। उसने शोर मचाकर कहा कि अपने ग्रन्थ में कुछ और लिखा है और व्याख्यान में कुछ और बोल रहे हैं। जब स्वामी जी ने ब्राह्मण के हाथ से ग्रन्थ लेकर देखा तो बिना संकोच, उन्होंने स्वीकार किया कि लेखकों ने उनके आशय के विरुद्ध लिखकर छपवा लिया है।

इस घटना ने उनकी आँखें खोल दीं। वस्तुतः स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश को स्वयं जुबानी बोलकर दूसरों से

लिखवाया था, स्वयं नहीं लिखा था। लिखवाने के बाद पाण्डुलिपि को न स्वयं देखकर पढ़ा था, न पुस्तक के प्रूफ़ ही देखे थे और न पुस्तक के छपने के बाद उसे पढ़ा था। स्वामी जी को यह भी आभास हो गया था कि उनके भौतिक शरीर का कभी भी अन्त हो सकता है। अतः वे अपनी सभी कार्यों की गतिविधियों को एक ऐसे दृढ़ आधार स्तम्भ स्थान पर केन्द्रित करना चाहते थे, जो पूरी तरह उनके उपयुक्त और योग्यतम हो।

इसके लिए उनकी नज़र टिकी अपने परम दिवाकर नवयुवक शिष्य, उनकी सभी आशाओं और कार्यक्रमों को पार लगाने की शक्ति रखने वाले वैदिक धर्म के कट्टर अनुयायी राजपुताना की मेवाड़ भूमि के नरेश महाराणा

सज्जन सिंह पर। अतः महर्षि दयानन्द की आगामी गतिविधियों का गढ़ बना 'महाराणा का उदयपुर' जहाँ पर उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना के बाद दो और मील के पत्थरों के स्तम्भ गाढ़े। उसमें से पहला था सत्यार्थप्रकाश का संशोधन और प्रकाशन का कार्य। दूसरा ऋषि के यजुर्वेद के भाष्य में भी पौराणिक धूर्त लेखकों ने मास-भक्षण का विधान लिख दिया था, जिसको शुद्ध करके छपवाया । महाराज सज्जनसिंह ऋषि के परमभक्त और सच्चे निष्ठावान वेदानुयायी और मेवाड़ के राजाधिराज थे। उनके अनुरोध पर ऋषि दयानन्द ११ अगस्त १८८२ ईस्वी को उदयपुर पहुँचे। महाराज ने उदयपुर के गुलाब बाग में स्थित अपने 'अतिथि महल' को ऋषि के निवास के लिए खोल दिया। महाराणा के इसी भवन को आजकल 'नवलखा महल' कहते हैं।

ऋषि दयानन्द उदयपुर में श्रावण शुक्ला १० से लेकर फाल्गुन कृष्ण ७ विक्रम संवत् १९३९ अर्थात् ११ अगस्त सन् १८८२ से २१ फरवरी १८८३ ईस्वी तक लगभग साढ़े छह माह महाराणा के 'नवलखा महल' में रहे। इतने समय तक महाराणा प्रतिदिन महर्षि दयानन्द की सेवा में उपस्थित होने लगे और उनसे व्याकरण, दर्शनशास्त्र तथा राजनीति आदि का गंभीर अध्ययन और विचार-विमर्श करते थे। ऋषि दयानन्द ने इतने समय तक इसी नवलखा महल उदयपुर में रहकर सत्यार्थप्रकाश का संशोधन-कार्य किया और उसकी भूमिका लिखी। संशोधित सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संस्करण की भूमिका के अन्त में लिखा महाराणा का उदयपुर । पाठकगण ! सत्यार्थप्रकाश ऋषि दयानन्द का अद्भुत क्रान्तिकारी ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ विश्व में धार्मिक अन्धविश्वासों को जड़ से उखाड़ने के उद्देश्य से तीव्र प्रहार करने वाला है। सामाजिक कुरीतियों, आर्थिक विषमताएँ, विकृत परम्पराएँ, राष्ट्रीय दासता और राजनीतिक समस्याओं आदि का समाधान करने वाला है। स्वस्थ जीवन पद्धति, सुखी और समृद्ध समाज तथा विश्व मानव जाति के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करता है। इसलिए जहाँ इस महान् ग्रन्थ का संशोधन किया गया, वह स्थान हम लोगों के लिए किसी तीर्थ से कम नहीं है।

- वानप्रस्थी राजवंश सॉलिक

ऋषि दयानन्द की ज्ञान ज्योति,
श्रद्धानन्द का त्याग अमर।
सावरकर की अग्नि ज्वाला,
सुभाष का हुंकार प्रखर।
बिस्मिल, खुदीराम और भगत सिंह,
फांसी पर हँसकर झूले।
आजाद की प्रतिज्ञा ने,
ब्रिटिश राज को भूले।
नीरा आर्या, श्याम जी और मदनलाल,
लहू से सींचा उपवन।
करतार सिंह, गोविंद गुरु और गेंदालाल,
राष्ट्र को किया अर्पण।
आओ शीश नवाएँ,
इन भारत के महान् सपूतों को।
'राष्ट्र मन्दिर' की इस गाथा को,
पहुँचाएँ हर घर–बूथों को।।

दयानन्द का मंत्र मिला अरु, श्रद्धानन्द का ज्ञान यहाँ,
आज़ाद की अमर प्रतिज्ञा, सावरकर बलिदान यहाँ।
बिस्मिल, भगत, खुदीराम का, इंकलाब फिर गूँजेगा,
नेताजी का 'दिल्ली चलो', अब भारतभर में गूँजेगा।
नीरा की अद्भुत कुर्बानी, गोविंद गुरु की शक्ति यहाँ,
श्याम जी, मदनलाल का जीवन,
देशप्रेम की भक्ति यहाँ।
करतार सिंह और दीक्षित जी के,
त्याग की पावन थाती है,
सिलिकॉन के इन रूपों में,
बलिदानों की बाती है।
'राष्ट्र मंदिर' बुलाता तुमको,
वीरों का वन्दन करने को,
राष्ट्र धर्म की इस ज्योति को,
अपने मन में भरने को।।

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों में से अनेकों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रुपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता, श्रीमती संचिता जैन; उदयपुर, श्रीमती कुसुम गुप्ता; सूरत, डॉ. बी.पी. भटनागर; उदयपुर, डॉ. अवन्त कुमार सचेती; उदयपुर, श्री अरुण अब्रोल; मुम्बई

न्यास समाचार

राष्ट्र मंदिर लोकार्पण एवं सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का भव्य समापन

गुलाब बाग में दो दिन से चल रहे नवलखा महल के अन्दर निर्मित राष्ट्र मन्दिर के लोकार्पण समारोह का हजारों आर्यजन के मध्य भव्य समापन हुआ। इसमें २२ फरवरी २०२६ को सायंकालीन सत्र में 'एक शाम महर्षि दयानन्द के नाम' कार्यक्रम के अन्तर्गत मुम्बई के संगीत ग्रुप

विवेक एवं समूह के द्वारा सुमधुर भजनों द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती को श्रद्धांजलि दी गई और साथ ही राष्ट्र मन्दिर में जिन १८ क्रान्तिकारी के स्कल्पचर्स बनाए गए हैं उनको एक कविता के रूप में श्रद्धांजलि दी गई। इस सरस कार्यक्रम में उपस्थित हजारों श्रोताओं के द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। महर्षि दयानन्द ने नवलखा महल में साढ़े छः मास प्रवास करके सत्यार्थ प्रकाश लिखा था, यह सर्वविदित है। इस सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं पर आधारित 'सत्यार्थ बोध' नाम की एक नाटिका प्रस्तुत की गई जो अत्यन्त प्रभावोत्पादक थी और इसका निर्देशन श्री मनीष शर्मा ने किया। वन्दे मातरम् के १५०वें वर्ष के उपलक्ष में उदयपुर के ही समूह की बालिकाओं ने कत्थक नृत्य प्रस्तुत करके अभिभूत कर देने वाली प्रस्तुति दी।

प्रातःकाल सीकर के पूर्व सांसद स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के १००वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष में आयोजित स्मृति श्रद्धांजलि कार्यक्रम में वक्ताओं ने श्रद्धानन्द जी महाराज और अन्य क्रान्तिकारियों को अपनी श्रद्धांजलि समर्पित की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री प्रकाश आर्य जी (मऊ) थे। इसके अतिरिक्त वक्ताओं में आचार्या सूर्या, आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, आचार्य जयेन्द्र शास्त्री; नोएडा, आचार्य वेदप्रिय शास्त्री; कोटा, डाक्टर नरेश धीमान; अजमेर, साध्वी उत्तमायति; अजमेर ने अपने प्रेरणादायक उद्बोधन में, स्वामी श्रद्धानन्द जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को अपने आचरण में उतारे ऐसा आह्वान किया। कार्यक्रम के प्रमुख विशिष्ट अतिथि श्री विनोद बंसल; राष्ट्रीय प्रवक्ता विश्व हिंदू परिषद् ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को उस समय में भारतीय शिक्षा पद्धति के उद्धारकर्त्ता के रूप में दर्शाया, जिस समय केवल क्रिश्चियन स्कूल अथवा मदरसे में इस तरह की पढ़ाई करवाई जाती थी। न्यायमूर्ति सज्जन सिंह जी कोठारी जो राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त भी हैं उन्होंने भी अपने विचार व्यक्त किए। उदयपुर के सांसद डॉ. मन्नालाल रावत ने महर्षि दयानन्द और गोविंद गुरु के बीच में सम्बन्ध को निरूपित करते हुए कहा कि इसी नवलखा महल में गोविंद गुरु ने महर्षि दयानन्द जी महाराज से दीक्षा ली और अग्निकुण्ड जो उन्होंने बनाया वह आज भी धूनी के रूप में आदिवासियों के बीच में जारी है जिसमें वे अपने प्रकार से यज्ञ सम्पन्न किया करते हैं। स्वामी दयानन्द की इसी प्रेरणा का परिणाम था की मानगढ़ में स्वतंत्रता की भावना का ऐसा ज्वार उठा कि अंग्रेजों ने उसको कुचलने के लिए जलियांवाला बाग से भी बड़ा हत्याकांड किया। श्री मन्नालाल रावत ने न्यास के पुस्तकालय के रिनोवेशन एवं संवर्धन हेतु अपना पूर्ण योगदान देने का मानस भी व्यक्त किया।

सभी वक्ताओं ने अपने वक्तव्य में राष्ट्र मन्दिर में जिन १८ क्रान्तिकारियों के प्रदर्श प्रस्तुत किए हैं और जिस रूप में किए हैं उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। यह बिल्कुल असल जैसे लगते हैं और जिस प्रकार से इनको स्टोरी के रूप में प्रस्तुत किया है वह युवा मन को राष्ट्रबोध कराने वाला साबित होगा।

अशोक आर्य का किया सम्मान

इस अवसर पर राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा; राजस्थान जयपुर की ओर से न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य का अभिनन्दन किया गया। वे ही इस राष्ट्र मन्दिर की कल्पना करने वाले और उसको साकार करने वाले हैं इसलिए आर्य जगत् ने उनका सम्मान किया।

अध्यक्ष के रूप में स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती- पूर्व सांसद सीकर ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से शिक्षा लेकर के आर्य समाज को किस प्रकार से आगे बढ़कर के कार्य करना चाहिए और आगामी वर्ष में स्वामी श्रद्धानन्द जी के व्यक्तित्व कृतित्व को सब तक पहुँचाना चाहिए इसकी आवश्यकता और स्वरूप का वर्णन किया। इस अवसर पर जिन १८ क्रान्तिकारियों को राष्ट्र मन्दिर में जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया गया है उसका विमोचन डॉ. मन्नालाल रावत; सांसद उदयपुर, स्वामी

सुमेधानन्द; पूर्व सांसद-सीकर एवं न्यास के न्यासियों द्वारा किया गया। सभी का धन्यवाद न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृत लाल तापड़िया ने किया। धन्यवाद देने के साथ और शान्तिपाठ के साथ इस भव्य लोकार्पण का समापन हुआ।

" राष्ट्रमंदिर-राष्ट्रवीरगाथा"

श्री अशोक जी आर्य द्वारा संकल्पित प्रकल्प राष्ट्रमंदिर का अनुपम एवं अद्वितीय दिव्य स्वरूप संप्रेरक एवं मनोहारी है।यहाँ राष्ट्रवीरों की महान जीवनगाथा का शिल्पकार ने ऐसा मूर्तरूप चित्रित एवं जीवंत किया है कि दर्शक देखकर मुक्तकंठ से प्रशंसा और प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

श्री दानवीर एवं महान राष्ट्रभक्त राजीव जी गुलाटी (एम डी एच)द्वारा निर्मित,संरक्षित एवं संपोषित यह भव्य राष्ट्रमंदिर आपके पुण्यात्मा पूज्य पिताजी श्री महाशय धर्मपाल जी के महायश को दिग् दिगन्त तक प्रसारित करेगा।

इस भव्यतम समारोह के शुभ अवसर पर स्वरचित सुभाषित-

1- मूलशंकरबालो वै,शुद्धचैतन्यनामकः।
ऋषिवरो दयानन्दः,महालोके महीयते।
2- धर्मपालो महामूर्तिः,महायशो महाशयः।
एम.डी.एच. विश्रुतं लोके,पद्मश्रीः पुण्यतां गतः।।
3- राजीवः नामको मान्यः,गुलाटीवंशभूषणः।
अनुव्रती महादानी, राष्ट्रमंदिरपूजकः।।
4- नवलखा महारम्ये,उदयपुरनामके।
सांस्कृतिक-महाकेन्द्रे,राजते राष्ट्रमंदिरम्।।
5- राष्ट्रं मे परमो धर्मः,राष्ट्रं मे जीवनं ननु।
प्राणाहुतिश्च राष्ट्राय,राष्ट्रदेवाय मे नमः।।
6- अशोकआर्यनेता वै,प्रधानः न्यासनायकः।
भवानीदासमन्त्री तु,सदस्याः कार्यसाधकाः।।
7- दानी राजीवधन्योऽयं,जितेन्द्रः भाटिया ननु।
गुलाटीवंशधन्यो वै,धन्याः कार्यनियोजकाः।।
8- साधवो मुनयो धन्याः,गुरवः वटवो ननु।
नराः नार्यश्च नेतारः,दानिनः शिल्पिनस्तथा।।
9- आचार्याः ज्ञानिनो धन्याः,धन्याः वेदपाठिनः।
विद्वान्सः गायकाः धन्याः,धन्योऽहं चन्द्रशेखरः।।
10-ऋषिगाथा महाविश्वे,सत्यार्थस्य प्रकाशनम्।
भासतां वेदवाणी च,चन्द्रोऽहं कामये सदा।।
11- भारतीयाः समायान्तु,पश्यन्तु राष्ट्रमन्दिरम्।
नमन्तु राष्ट्रवीरान्वै,वन्देऽहं चन्द्रशेखरः।।

सुभाषित-रचनाकार- आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा
स्वस्ति-सदन, ग्वालियर

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | डॉ. अमृत लाल तापड़िया, संयुक्तमंत्री-न्यास

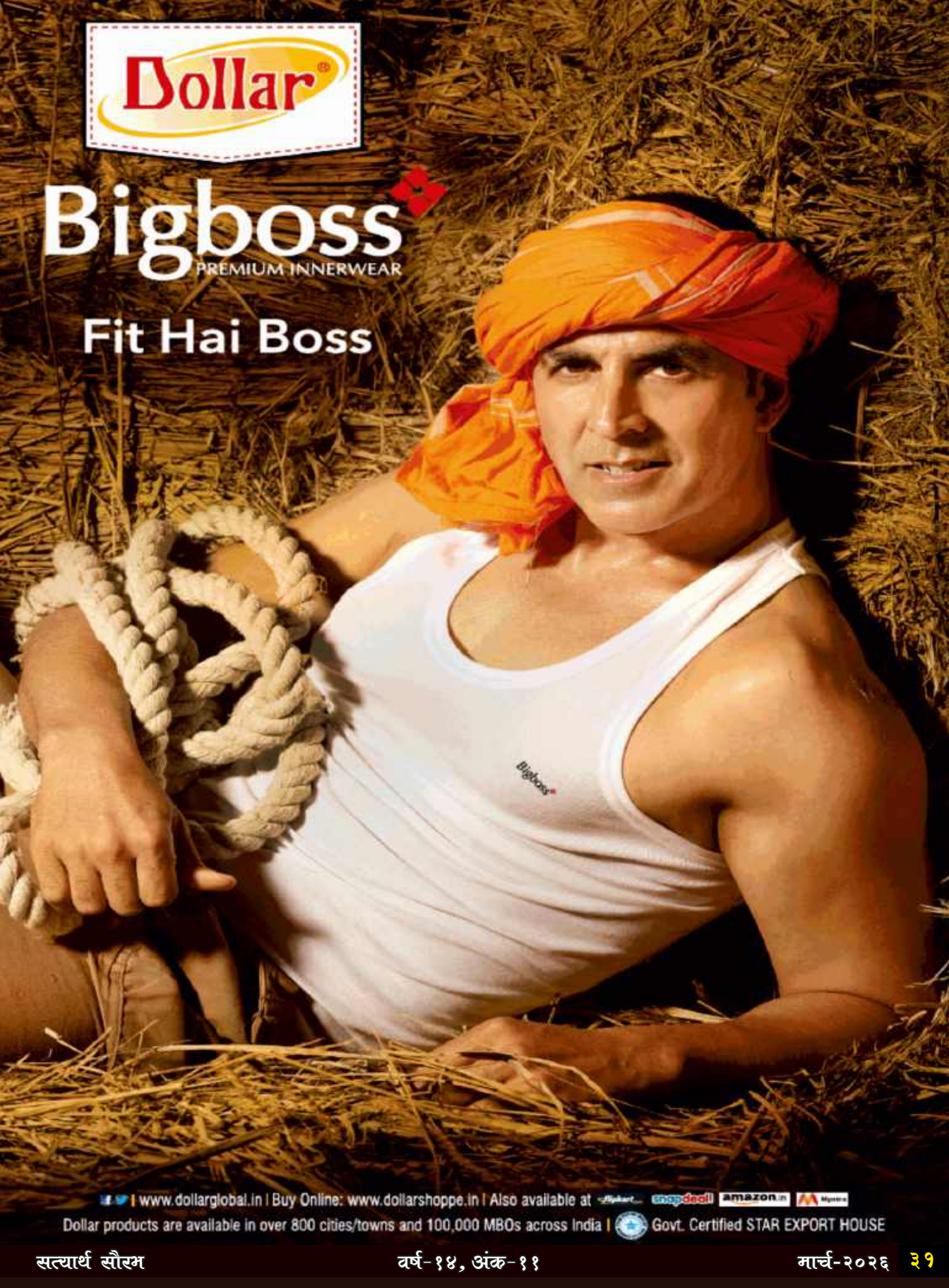

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
| www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at snapdeal amazon.in
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 March-2026 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2025-2027

जैसे घोड़ों को सारथि रोककर शुद्ध मार्ग में चलाता है, इस प्रकार इन (इन्द्रियों) को अपने वश में करके अधर्ममार्ग से हठाके धर्ममार्ग में सदा चलाया करे।

सत्यार्थ प्रकाश दशम समुल्लास पृष्ठ 259

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर